देश की नं. 1 ग्रामीण मासिक पत्रिका

ग्राम संस्कृति

कृषि मूलम् जगत सर्वम्

वर्ष 15 • अंक 1 • मई 2016 • विक्रम संवत् 2073 • वैशाख/ज्येष्ठ मास • मूल्य रु. 25

शिखर पर शतक

प्रकाश बियाणी, कारपोरेट इतिहासकार

जैन ग्रुप, जलगांव के संस्थापक पद्मश्री डा. भंवरलाल जैन का 25 फरवरी 2016 को 79 वर्ष की उम्र में मुम्बई के एक अस्पताल में अल्पकालीन बीमारी के बाद निधन हो गया। देश में दूसरी हरित क्रांति कैसे होगी और देश के छोटे किसान कैसे खुशहाल होंगे इसकी दिशा दिखाने वाले स्व. डा. भंवरलाल जैन के निधन से ग्राम संस्कृति परिवार भी शोकग्रस्त है। दिव्यात्मा को विनम्र श्रध्दांजली स्वरूप विशेष आलेख...

देश ने खोया भूमिपुत्र उद्योगपति

सात हृदयाघात, दो बायपास सर्जरी, एक एंजियोप्लास्टी तथा पेसमेकर ने भँवरलाल जैन को नहीं थकाया, ना ही थामा और ना ही डराया। 79 वर्ष की उम्र में भी वे 12 घंटे व्यस्त रहते थे। उन्होंने देश के एक छोटे से शहर में स्थापित उद्योग को बहुराष्ट्रीय उद्योग समूह बनाया तो अपने चार पुत्रों- अशोक, अनिल, अजित व अतुल जैन को गुरु और गाइड बनकर बिजनेस के गुर व सामजिक सरोकार के संस्कार सिखाए। अपने जीवनकाल में ही जैन समूह के कारोबार की दैनंदिन जवाबदारी अपने पुत्रों को सौंप देने वाले स्व.भँवरलाल जैन 'भाऊ साहब' कहते थे- मैंने जब कारोबारी कॅरियर शुरू किया था तब संकल्प लिया था कि मैं जब भी दुनिया छोडूं तो यह उससे बेहतर हो जैसा मैंने इसे पाया था। मुझे संतोष है कि मैंने इस दिशा में ईमानदार कोशिश की।

कामयाबी के शिखर पर पहुँचने के लिए चाहिए जमीनी सूझबूझ और असीम धैर्य। कामयाबी कड़ी परीक्षा लेती है। जो लोग मजबूती से कदमताल करते हुए शिखर पर पहुँचते हैं, वे हर परीक्षा में सफल होते हैं। वे दुर्दिनों का भी सामना करते हैं, पर अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण और धैर्य के साथ। वस्तुत: सफल उद्यमी वे हैं, जो कामयाबी के पिरामिड पर लम्बी पारी खेलते हैं। जैन ग्रुप, जलगांव के संस्थापक पद्मश्री डा. भंवरलाल जैन ऐसे ही यशस्वी उद्योगपति थे।

स्व. भँवरलाल जैन के पुरखे रोजगार की तलाश में सन् 1887 में राजस्थान से जलगाँव आए थे। विश्वप्रसिद्ध अजंता गुफा के नजदीक एक छोटा-सा गाँव वडाली वाकोद उन्हें रास आया। वे यहाँ कपास व सब्जी की खेती करने लगे। सन् 1937 में जन्में भँवरलाल जैन ने जलगाँव में स्कूली शिक्षा और पोत्दार कॉलेज, मुम्बई से कॉमर्स व विधि स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने एमपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली तो उन्हें राजपत्रित अधिकारी की नौकरी मिल गई पर वैश्य संस्कारों ने उन्हें गजेटेड अफसर नहीं बनने दिया। युवा भँवरलाल ने अपना कारोबार शुरू करने का निर्णय लिया तो वैश्य परिवार ने जोखिम उठाकर तीन पीढ़ियों की सारी पुश्तैनी बचत उन्हें सौंप दी। भँवरलाल जैन ने 7 हजार रुपए की इस पूँजी से एक बैलगाड़ी और घासलेट के ड्रम्स खरीदे। वे गाँव-गाँव भटकने लगे। घासलेट बेचकर थोड़ा पैसा कमाया तो सलीके का कारोबार करने की मंशा से परिवार के सदस्यों के साथ एक ट्रेडिंग फर्म स्थापित की- जैन ब्रदर्स। जैन बंधुओं ने एस्कॉर्ट ट्रैक्टर्स व राजदूत मोटरसाइकिल की डीलरशिप भी ले ली। कृषि उपकरण, बीज, खाद, पेस्टीसाइड्स के अलावा केमप्लास्ट गरवारे के पीवीसी पाइप्स भी किसानों को बेचे।

भँवरलाल जैन ट्रेडिंग से अच्छा पैसा कमाने लगे थे पर उन्हें दूसरों के उत्पादों को प्रमोट करना रास नहीं आया और उन्होंने मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में प्रवेश करने की योजना बनाई। भँवरलाल जैन ने 30 लाख रुपए में एक रुग्ण 'बनाना-पावडर संयंत्र' खरीदा जबकि तब उनके पास सरप्लस पूँजी थी मात्र 2 लाख रुपए। इस संयंत्र से उन्होंने पपीते के दूध से पपेन बनाना शुरू किया और उसे अमेरिका जैसे देश को निर्यात किया। रिफाइंड पपेन के विकल्प के रूप में सिंथेटिक्स उपयोग होने लगे तो भँवरलाल जैन इरिगेशन ने यह व्यवसाय समेट लिया, पर 80 के दशक में वे पश्चिम के देशों को रिफाइंड पपेन सप्लाय करने वाले दुनिया के सबसे बड़े उद्योगपति बन गए थे। इस सफलता ने पहली बार जलगाँव को विश्व मानचित्र पर पहुँचाया तो भँवरलाल जैन का कद भी इतना बड़ा हो गया कि महाराष्ट्र के किसान उन्हें 'भाऊ साहब' के आत्मीय सम्बोधन से पुकारने लगे थे। सही भी है। भँवरलाल जैन ने भारतीय किसानों से बड़े भाई का सम्मान व सूझबूझ से प्राप्त किया था। उन्होंने जोखिम उठाकर लीक से हटकर प्रयोग किए और लाखों किसानों के घर समृद्धि व खुशहाली पहुँचाई।

भाऊ साहब ने रिफाइंड पपेन का निर्यात करते हुए दुनिया के फूड मार्केट को नजदीक से देखा तो पाया कि भारत में भारी मात्रा में फल-सब्जी (लगभग 11 करोड़ टन) पैदा होते हैं, पर इसका मात्र 2 फीसदी हिस्सा ही वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स में बदला जा रहा है जबकि दुनिया में इनकी भारी माँग है। इस कारोबार में उन्हें जैन इरिगेशन के साथ भारतीय किसानों के लिए भारी सम्भावनाएँ दिखी तो न्यू जनरेशन स्टेट-ऑफ-द-आर्ट संयंत्रों व वर्ल्ड क्लास पैकेजिंग व परिवहन साधनों के साथ फल-सब्जी प्रोसेसिंग उद्योग में प्रवेश किया। जैन इरिगेशन का यह निर्यात कारोबार आज इतना विशाल हो गया है कि कच्चे माल के लिए जैन इरिगेशन जहाँ जलगाँव स्थित 1000 एकड़ के जैन एग्री पार्क में खुद खेती कर रहा है वहीं 7000 से ज्यादा किसानों से फल-सब्जी की कांट्रेक्ट फॉर्मिंग करवा रहा है। जैन इरिगेशन डिहाइड्रेटेड प्याज, सब्जियाँ, फल आदि को 'फार्म फ्रेश' के नाम से अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, जापान, जर्मनी, स्वीडन जैसे 60 देशों को निर्यात करता है। कोका कोला, नेस्ले, कारगिल जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ 'फार्म फ्रेश' से बनी डिशेज सारी दुनिया में सर्व कर रही हैं। इस कारोबार ने जलगाँव क्षेत्र के हजारों किसानों को मिलेनियर बनाया है।

स्व. भँवरलाल जैन की किसानों को एक और सौगात है - केला फसल के रोगमुक्त मदर प्लांट, जिन्हें जैन इरिगेशन के कृषि वैज्ञानिकों ने जलगाँव स्थित जैन एग्री पार्क में विकसित किया है। इसने केले का उत्पादन 50 से 100 फीसदी बढ़ाया है तो उत्पादन अवधि 18 माह से घटाकर 10 से 11 माह कर दी है। महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, मणिपुर, नागालैंड एवं असम के किसानों की केला एक पसंददीदा फसल हो गई है। केले की फसल के अलावा अन्य फल-सब्जियों के उन्नत पौधे भी किसानों को जैन एग्री पार्क से मिलते हैं एवं उनकी खेती करने के गुर भी उन्हें सिखाए जाते हैं।

हमारे देश में माइक्रो इरिगेशन सिस्टम का पायोनियर जैन समूह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा (प्रथम क्रम पर इजराइल की नेटाफिम) ड्रीप इरिगेशन निर्माता है। यह ऐसी सिंचाई पद्धति है जो खेती में पानी और खाद का उपयोग न्यूनतम करती है क्योंकि इसके जरिये खेती के ये दोनों अनिवार्य तत्व सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचते हैं। इसके लिए वॉल्व्स, पाइप्स, ट्यूबिंग और एमिटर्स का उपयोग किया जाता है। ड्रीप इरिगेशन ने 25 लाख एकड़ से अधिक बंजर भूमि को उपजाऊ कृषि भूमि में बदला है। लाखों किसानों का इससे फसलोत्पादन बढ़ा है। कई किसानों ने तो 3 गुना अधिक उत्पादन का कीर्तिमान बनाया है।

जैन इरिगेशन समूह सर्वाधिक फल और सब्जियों का सबसे बड़ा प्रोसेसिंग उद्योग समूह है। यह समूह संगठित क्षेत्र में देश का सबसे बड़ा मेंगो (आम) पल्प प्रोसेसर भी है। अनुमान लगाया जाता है कि दुनिया में इस क्षेत्र में इसका तीसरा क्रम है। प्याज और सब्जी की कांट्रेक्ट फार्मिंग में भी जैन समूह ने किसानों को भागीदार बनाया है। समूह के फूड प्रोसेसिंग प्लांट्स के लिए ये किसान अनुबंधित मूल्य पर कांट्रेक्ट फार्मिंग करते हैं। समूह उन्हें अधिक उत्पादन की तकनीक प्रदान करता है और बैंकों से कर्ज दिलवाने में भी मदद करता है।

सक्षेप में कहें तो पद्मश्री डा. भंवरलाल जैन की किसानो के लिए वही हैसियत थी जो आईटी युवाओं के लिए एन.आर.नारायण मूर्ति की है। विडम्बना यह है कि कुछ लाख युवाओं को रोजगार देनेवाले आई टी उद्योग में कुछ होता है तो हम सब खासकर मिडिया खूब शोर मचाता है। देश के अरबों किसानों को खुशहाल बनाने के लिए जीवनपर्यन्त सार्थक प्रयास करनेवाले कृषि उद्यमियों की चर्चा नहीं होती। हम भूल रहें हैं कि कृषि हमारी ही नहीं, हमारे देश की अर्थ व्यवस्था की भी बुनियाद है। देश चाहे भूल जाए पर अन्नदाता किसान अपने भाऊसाहब को कभी भूला नहीं पाऐंगे।

जैन इरिगेशन समूह भारत में सर्वाधिक प्लास्टिक पाइप्स बना रहा है तो एक छत के नीचे सबसे ज्यादा प्लास्टिक शीट्स (पीसी एंड पीवीसी) भी बनाता है । लकड़ी का बेहतर विकल्प होने से प्लास्टिक शीट्स जंगलों की कटाई घटाते हैं अर्थात पर्यावरण हितैषी हैं।

सन् 1997 में इरिगेशन एसोसिएशन यूएसए ने स्व. भँवरलाल जैन को क्राफोर्ड रेड मेमोरियल अवार्ड प्रदान किया था। यह अवार्ड उन्हें ड्रीप इरिगेशन तकनीक प्रमोट करने और उसे अमेरिका के बाहर इरिगेशन उद्योग में अपनाने के लिए मिला था। वे दूसरे एशियन और पहले भारतीय थे जिन्हें यह अवार्ड मिला। भाऊ साहब को केंद्र और विभिन्न राज्य सरकारों ने भी दो दर्जन से ज्यादा अवार्ड्स प्रदान किए थे। जैन समूह को वैज्ञानिक खेती बढ़ाने के लिए 130 से ज्यादा नेशनल व इंटरनेशनल अवार्ड्स मिले हैं।

किसान हितैषी थे भाऊ साहब

सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ, तब हम थे 37 करोड़। देश की बहुसंख्यक आबादी तब भी खेती पर निर्भर थी। संयोग से हमारे पास पर्याप्त कृषि योग्य भूमि थी। हमने उन्हें मॉडर्न खेती के गुर नहीं सिखाए और देश को भुखमरी का सामना करना पड़ा। सन् 1964 में हरित क्रांति ने हमें अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बना दिया, पर हमने इस सफलता को व्यापक नहीं बनाया। अब फिर दूसरी हरित क्रांति का स्वप्न देखा जा रहा है, जिसे स्व. भँवरलाल जैन ने जलगाँव स्थित जैन एग्री पार्क में साकार किया है। यह इस बात का प्रमाण है यदि भारतीय किसान तकनीक आधारित मॉडर्न खेती करें तो भारत सही मायने में 'सुपर पॉवर' बन जाए जिसकी उम्मीद हम आईटी जैसे उद्योग क्षेत्र से करते हैं जो एक सीमित आबादी की आय तो कई गुना बढ़ा देते हैं पर बहुसंख्यक ग्रामीण आबादी को निरीह, नादान और नासमझ समझते हैं।

सामाजिक दायित्वों का निर्वहन

सन् 1982 में स्व.भँवरलाल जैन ने जब जैन फाउंडेशन की स्थापना की थी, तब कॉरपोरेट वर्ल्ड में सीएसआर (Corporate Social Responsibility) को लेकर आज जितनी जागरूकता नहीं थी। जैन इरिगेशन के इस समाजसेवी सार्वजनिक ट्रस्ट की स्थापना का प्रयोजन था- शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं को जरूरतमंदों तक पहुँचाना, अपने कार्यक्षेत्र में स्पोर्ट्स खासकर देसी खेलों को प्रमोट करना और भारतीय संस्कृति व पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करना। तद्नुसार विगत 27 वर्षों में जैन फाउंडेशन ने ग्रामीण परिवारों को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए हजारों चिकित्सा शिविर आयोजित किए हैं। स्थानीय अस्पतालों में चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के लिए सहयोग राशि प्रदान की है। कई टूर्नामेंट्स आयोजित किए हैं। एक सर्वसुविधायुक्त जिम स्थापित किया है। जैन फाउंडेशन ने मंदिरों, दरगाह और जैन स्थानकों के पुनरुद्धार में भी सहयोग प्रदान किया है।

स्व.भँवरलाल जैन 'भाऊ साहब' का सोच था कि शिक्षा से ही देश की ग्रामीण आबादी का जीवनस्तर सुधरेगा। उन्होंने कई अंग्रेजी, मराठी व उर्दू स्कूलों के भवन व होस्टल बनवाए । गाँव में एक प्रायमरी और जलगाँव में किंडर गार्डन स्थापित किए नासिक में पॉलिटेक्निक कॉलेज के लिए सहयोग राशि प्रदान की ।

शिक्षा के क्षेत्र में उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है अनुभूति। जैन हिल्स व जैन वेली के नजदीक 100 एकड़ भूखंड पर स्थापित अनुभूति एक मॉडल रेसीडेंशियल स्कूल है, जहाँ अध्यापक अपने परिवार सहित बच्चों के साथ रहते हैं। इस स्कूल में बच्चों को शाकाहारी भोजन व डेरी उत्पाद सर्व किए जाते हैं। मनोहारी स्थल पर निर्मित भव्य स्कूल भवन ही नहीं पूरा परिसर एक मॉडर्न 'गुरुकुल' का आभास करवाता है। यहाँ सर्वसुविधायुक्त क्लास रूम बने हैं। अध्यापन के साथ छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिए खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, योग, डांस, थिएटर, आर्ट्स व क्राफ्ट्स की भी ट्रेनिंग दी जाती है।

भाऊसाहब मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे थे। कम पूंजी से गाँव गाँव भटककर उन्होंने पैसा कमाया था। वे जानते थे कि मध्यम व निर्धन परिवारों को अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाने के लिए किन किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है उन्होंने इसीलिए गरीबी की जीवन रेखा से नीचे जीनेवाले परिवारों के बच्चों के लिए भी एक स्कुल स्थापित किया।

यहाँ आज सैकड़ों बच्चे न केवल नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि उन्हें किताबें, भोजन और अन्य जरूरी सामान भी बिना शुल्क उपलब्ध करवाया जा रहा है.

स्व. भँवरलाल जैन 'भाऊ साहब' ने जैन इरिगेशन को कैसे तैयार किया, यह जानना प्रेरक है तो दिलचस्प भी...

जैन समूह जलगांव के सिरमौर कम्पनी जैन इरिगेशन सिस्टम्स का सूत्र वाक्य है- स्माल आयडियाज, बिग रिवोल्यूशन। 10 हजार कर्मचारियों की यह कम्पनी सालाना 60 अरब रुपयों का कारोबार कर रही है। यह ऐसा बहुराष्ट्रीय समूह है जिसके दुनिया में 28 स्थानों पर मेंयुफेक्चरिंग संयंत्र हैं।

–जैन इरिगेशन का माइक्रो इरिगेशन डिवीजन प्रीसिसन इरिगेशन प्रोडक्ट्स की सम्पूर्ण श्रृंखला बनाता है। जैन एग्री पार्क में 1000 एकड़ का हाई–टेक एग्रो इंस्टीट्यूट स्थापित किया गया है। यहाँ फार्मिंग शोध–अनुसंधान, डिमांस्ट्रेशन और ट्रेनिंग दी जाती है और टर्न–की प्रोजेक्ट्स पूरे किए जाते हैं। यहाँ कृषि और सिंचाई वैज्ञानिक, टेक्नोक्रेट्स और टेक्नोलॉजिस्ट कार्यरत हैं।

–जैन इरिगेशन देश का सबसे बड़ा प्लास्टिक पाइप्स उत्पादक समूह है।

यह हर किस्म के पाइप्स और फिटिंग्स बनाता है। जैन इरिगेशन के स्क्रीन और केसिंग पाइप्स यूरोपियन देशों को निर्यात किए जाते हैं तो पीवीसी और पीई पाइप्स भारतीय किसानों तक पहुँचते हैं जो जल आपूर्ति (परिवहन), कंस्ट्रक्शन कार्य, डक्टिंग, गैस परिवहन और सिंचाई के लिए उपयुक्त हैं। टेलीकॉम सेक्टर में डक्टिंग कार्य के लिए एयरटेल, रिलायंस कम्युनिकेशंस, टाटा टेलीसर्विसेज, वोडाफोन, एस्सार और बीएसएनएल जैसी बड़ी कंपनियाँ इन पर निर्भर हैं।

–जैन इरिगेशन का टिश्यू कल्चर डिवीजन उन्नत बनाना (केला) प्लांट्स विकसित करता है। इसके लिए जैन एग्री पार्क में आर एंड डी और बायोटेक लैब स्थापित की गई है।

–जैन इरिगेशन कृषि और फ्रूट प्रोसेसिंग वेस्ट को ऑर्गेनिक इनपुट्स में बदलता है।

–एग्रो प्रोसेस्ड प्रोडक्ट्स डिवीजन फलों को शोरबे, कांसेंट्रेट्स, जूस और आईक्यूएफ उत्पाद बनाने के लिए प्रोसेस करता है। यहाँ प्याज और सब्जियों की सेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए उन्हें वैज्ञानिक पद्धति से डिहाईड्रेट किया जाता है। इतना वैज्ञानिक व उन्नत एग्रो प्रोसेस्ड डिवीजन ने उत्पाद फल और सब्जी को वैल्यू–एडेड प्रोडक्ट्स में बदलने की मिसाल कायम की है।

–जैन इरिगेशन पीवीसी शीट्स भी बनाता है जो जंगलों और वृक्षों की कटाई रोकते हैं, क्योंकि ये शीट्स लकड़ी का बेहतर विकल्प हैं।

पुरस्कार व सम्मान

डा.भवरलाल जैन को उनके इस व्यापक कार्य के लिए देशभर के विभिन्न पुरस्कार सम्मान प्राप्त हुए। इनमें निम्न पुरस्कार प्रमुख है।

★ सम्माननीय सदस्यता एम.बी.ए. अमेरीका - विदेशी सदस्यता का चयन। 1980 आई.एन.टी.एन.एल.

★ उपराष्ट्रपति एम. हिदायतुल्ला के हाथो उद्योग पत्र आई.टी.आई.डी. नई दिल्ली स्वयंनिर्मीत उद्योगपति।

★ बधाई पात्र स्वयंसेवी संगठन, जामनेर मोरारजी देसाई, पुर्वप्रधानमंत्री कृषि क्षेत्र मे अभूतपुर्व कार्य।

★ आई.एम.एम. बाटा विपणन पुरस्कार, आई.एम.एम. बाटा, ज्ञानी जैलसिंह, राष्ट्रपति के हाथों, विपणन रजत पुरस्कार।

★ ए.आर. भट्ट औद्योगिक पुरस्कार एफ.ए.एस. एस.आई. आर. वेंकटरामन, राष्ट्रपति रासायनिक कृषि उत्पादों के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान।

★ प्रशंसा प्रमाणपत्र एम.एस. एफ.सी. एस.आर. दामानी, अध्यक्ष एम.एस.एफ. सी.ए.आर. भट्ट औद्योगिक पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।

★ उद्योग विभूषण आई.टी. आई.डी. नई दिल्ली प्रणव मुखर्जी, योजना आयोग के उपाध्यक्ष के हाथों औद्योगिक क्षेत्र में श्रेष्ठतम प्रस्तुति।

★ सम्माननीय सदस्यता आई. आई.आई.ई. हैदराबाद अध्याय कृष्णकांत, आंध्रप्रदेश राज्यपाल के हाथों राष्टीयता एवं व्यावसायिक सफलता, शिखरता।

★ एफ.आई.ई. फाऊंडेशन पुरस्कार स्वयंसेवी संगठन, इचलकरंजी शिवराज पाटील, स्पीकर लोकसभा के हाथो कृषि एवं प्रबंधन में खोज।

★ क्रॉफर्ड रीड मेमोरीयल पुरस्कार यू.एस.ए. सिचाई संगठन श्री लॉईस टोथ, अध्यक्ष यु.एस.ए. सिचाई संगठन अमेरिका से बाहर सिचाई तकनिक के विस्तार एवं उपयोग के प्रोत्साहन।

★ वसंतराव नाईक कृषि संशोधन एवंम ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान पुरस्कार वी.एन.के.एस.–जी.वी.पी. पुसद - अमेरिका के बाहर विश्व मे सिचाई की तकनीक के विस्तार में अभूतपुर्व योगदान के लिए मिले पुरस्कार के लिए।

★ वसंतराव नाईक स्मृति पुरस्कार वी.एन.एस.पी. पुसद - कृषि क्षेत्र मे अभूतपुर्व योगदान के लिए।

★ यशोदीप पुरस्कार आई.ई.आई. नासिक माधवराव चितडे, अध्यक्ष - ग्लोबल वाटर पर्टनरशिप सिचाई क्षेत्र की नई कल्पनाओं के साथ विश्व में नाम रोशन करने के लिए।

★ जीवन गौरव रोटरी क्लब मुंबई डॉ. गुलाम, रोटरी क्लब मुंबई डाऊनटाऊन कृषि एवं सिंचाई क्षेत्र में, देश की प्रगती में उल्लेखनीय योगदान के लिए।

★ गौरव सम्मान स्वयंसेवी संगठन (बी.जे.एस.), भुज अटलबिहारी बाजपेयी, प्रधानमंत्री भारत सरकार द्वारा भुज भूकंप पिडितों के लिए असाधारण कार्य करने के संदर्भ मे।

★ भारत की तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देविसिंह पाटिल के हाथों पद्मश्री उच्च सम्मान।

★ गांधी–अम्बेडकर सामाजिक न्याय पुरस्कार गांधी–अम्बेडकर फाऊंडेशन मुंबई चंद्रशेखर धर्माधिकारी, पुर्वन्यायाधीश कृषि उद्योग में लम्बे समय तक के योगदान के लिए।

★ कृषि तंत्र रत्न वी.सी. टॅक्स फाऊंडेशन मुंबई पद्मविभूषण डॉ. वर्गीस कुरीयन कृषि क्षेत्र में नये तंत्रको प्रोत्साहन देने के लिए।

★ कृषि औद्योगिक, सामाजिक प्रबंधन कार्यकुशलता यशवंतराव चौहान प्रतिष्ठान मुंबई पद्मश्री एन.डी. महानोर, मराठी कवि महाराष्ट्र के हाथों आपदाप्रभावी क्षेत्रो में टपक सिंचन का प्रसार करके कृषि मे नये संशोधन लाने के योगदान के लिए।

★ भारत का जलरक्षक युनेस्को एवं वाटर डिजेस्ट, जयप्रकाश नारायण यादव, केंद्रीय राज्यमंत्री जलसंरक्षण के हाथों जलक्षरण रोकने एवं पुर्नभरण में योगदान के लिए।